P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

हिन्दुस्तान में समय के साथ नारी का बदलता स्वरूप

अनिल कुमार
पुस्तकालय विभाग,
भगत फुल सिंह महिला विश्वविद्यालय,
खानपुर कलां, सोनीपत,
हरियाणा

सारांश

हिन्दुस्तान में नारी को देश को आगे ले जाने के लिये जननी कहा गया है। हिन्दुस्तान की आधी से अधिक जनसंख्या गांव में रहती है। आधुनिक युग में नारी के जीवन में विकास तेजी से हो रहा हैं। नारी के द्वारा प्रत्येक कार्य आज के समय में किये जा रहे है। लेकिन उन पर दिन–प्रतिदिन अत्याचार और अपराध की घटनाएं कानून होने पर भी बढ़ रही है। महिलाओं पर होने वाले अपराधों में सबसे अधिक बलात्कार, उपेक्षा, बाल विवाह आदि प्रमुख है। पुराणों में कहा गया है कि जहां पर नारी की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते है और उस स्थान पर हमेशा खुशी प्राप्त होती रहती है। उनका विकास हर समय आगे बढ़ता रहता है। आज ये युग मे नारी पूर्ण रूप से आजादी प्राप्त करने के लिये प्रयासरत है। इसलिये प्रत्येक क्षेत्र में आगे आती जा रही है। पुरूष समाज महिलाओं से कार्य तो करवा लेता है, लेकिन जब उनको समानता का हक देने की बात हो तो वह अपने कदम पीछे खींच लेता है। इसलिये ये कहना ठीक होगा कि आधुनिक युग तक महिलाओं को आजादी प्रदान नहीं की गई है। आधुनिक युग में शहर के साथ में ग्रामीण क्षेत्र में भी तेजी से विकास हो रहा है। इस युग में महिलाएं सशक्त होती नजर आ रही है। प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाकर देश के विकास को आगे ले जाने में मदद कर रही है। जो महिलाएं पहले अपने क्षेत्र से बाहर जाने में डरती थी, आज के आधुनिक युग में पुरूष वर्ग के साथ दिन–रात मिलकर कार्य कर रही है। नारी का गांव को आगे ले जाने में अहम रोल दिखाई देने लगा है, ये अब केवल धर के कार्यो और खेत तक सीमित ना रह कर उच्च शिक्षा और शहर तक के कार्यो में शामिल होकर आगे बढ़ाने में लगी रहती है। इनको दिन–रात कार्य करने में अब कोई दिक्कत नहीं आ रही है। आज के समय में सेना के सभी भागों में कार्य कर रही हैं। देश में शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा से अच्छे परिणाम देकर अपना नाम आगे बढ़ा रहीं है। नारी आप तो शिक्षा ग्रहण कर ही रही है आगे जाकर एक परिवार को और शिक्षा देती है, जिससे अपने परिवार के लोग तो शिक्षा लेते ही है और आगे जाकर लडके वालों को भी उचित शिक्षा देने का कार्य कर रही है। जिससे एक पथ दो काज की कहावत वाली बात सीध हो रही है और देश के विकास में इस युग में अपनी छाप छोड़ रही है।

मुख्य शब्द : सेना, सशक्त, आजादी, ग्रामीण, पहचान, नारी, क्षेत्र, विकास, दिक्कत, आधुनिक, दिन–रात, अत्याचार और अपराध, युग, परिणाम, आदि।

प्रस्तावना

नारी के बिना देश का विकास नहीं हो सकता। अधिकतर नारी ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है और अपने घर का प्रत्येक कार्य वो ही करती है। घर का कार्य करके वो अपने खेतों का कार्य भी पुरूष के साथ मिलकर करती है। आज के युग में कोई भी ऐसा पद नहीं जिस पर नारी ने कार्य नहीं किया हो। सरकार के सभी पदों पर नारी ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है। नारी देश की रक्षा के लिए बार्डर पर तैनात की जाने लगी है। वो वहां पर बिना डर के देश की रक्षा का महत्वपूर्ण कार्य कर रहीं है। इस युग में नारी केवल कार्य ही नही देश की राजनीति के क्षेत्र में भी अपनी भागीदारी को कायम करके वहां पर भी अच्छे से कार्य पूर्ण कर रही है। छोटे पद से लेकर बड़े पद तक पर इनकी संख्या में दिन–प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है। सम्पूर्ण विश्व में भारत एक विकासशील देशों में गिना जाने लगा है, जिसमे नारी की महत्पपूर्ण भूमिका है। आधुनिक युग में नारी अपने जीवन के फैसले लेने के लिय आजाद है और अपनी इच्छा अनुसार कार्य कर रही है। पहले के समय में पुरूष नारी को अपनी दासी मानता था, लेकिन आज के समय में वो उनके साथ मिलकर कार्य कर रही है। घर से बाहर निकलकर कार्य करने जाने लगी है।नारी को उचित शिक्षा

शिक्षा और सशक्त समाज में उनकी भागीदारी देनी होगी, जिससे ग्रामीण आंचल को विकसित करने के साथ ही शहरी क्षेत्र का विकास भी साथ में होगा। आधुनिक युग की ये मागं है, जिस प्रकार से प्रत्येक देश विकास के लिये दिन–रात एक किये हुये है। उसी प्रकार से आधुनिक युग में भारत को भी विकास के कदम पर आगे ले जाने के लिये नारी का उचित सम्मान करते हुये, उनके साथ मिलकर कार्य करना होगा। उनकी रहने की दशा उनके साथ में समाज का व्यवहार और अपने पति को ही भगवान मान कर उनके आदेश अनुसार कार्य करने को ही अपना दायित्व समझती है। भारत में संविधान में बदलाव करके ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत मुखिया के लिये आरक्षित सीट भी नारीयो के लिये रखी जाने लगी है। पंचायत की मुखिया भी नारी बनने लगी है और समाज के कार्यो में अपना अहम रोल अदा करने लगी है। आधुनिक युग में नारियों की भागीदारी दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। लेकिन अभी भी नारियों के विकास के लिये बहुत कुछ करने की जरूरत है। इसके लिये योग्य नारियों को आगे आना होगा और अपनी बात को आगे ले जाने के लिये उचित कार्य करना होगा। नारी की पूजा करने वाले स्थान का विकास सम्भव है। नारी सुन्दरता की प्रतीक मानी जाती है। नारी पुरूष समाज के बराबर मिलकर चलने के लिये कार्य कर रही है।

वैदिक काल में नारी को पूर्ण सम्मान दिया जाता था, सभी प्रकार के अधिकार उनको प्राप्त थे। बिना नारी के धार्मिक कार्य अपूर्ण माने जाते थे। पुरूष नारी के बिना पुरूषार्थ को प्राप्त नहीं कर सकता था। उत्तर वैदिक काल में नारी के कुछ कार्यो पर रोक लगा दी गई। उसे यज्ञ करने के मना कर दिया गया और उसमें भाग नहीं लेने दिया जाने लगा। पुरूष अपने को अधिक योग्य मानने लगे और नारी को दबा कर रखने का कार्य करने लगें। स्मृति युग में नारी के उपर और अधिक प्रतिबन्ध लगा दिये गये और उसे केवल अपने पति की सेवा करना ही उसका प्रमुख कार्य बताया गया। नारी को बाल्यकाल अपने पिता के पास और इसके बाद में अपने पति के पास अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। बाल विवाह पर जोर दिया गया और शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

मध्यकालीन युग में नारी के प्रति पुरूष समाज में और अधिक बदलाव आया और इनका शोषण करना आरम्भ हो गया। जिस प्रकार से जो नारी केवल अपने मकान की चार दिवारी में अपना पूर्ण जीवन रह कर व्यतीत करती थी और वहां से बाहर निकलना अपने धर्म के खिलाफ मानती थी। आजादी के बाद नारी के अन्दर बदलाव आया और इस युग में नारी ने पहले उचित शिक्षा प्राप्त की और फिर समाज के कार्यो को अपना योगदान देकर अपनी उपयोगिता दिखाई। नारी ने आगे बढ़ने के लिये दिन–रात एक किये और उसका परिणाम आज के युग में सबके सामने आ रहा है, उसके परिणाम आज के युग में पुरूष वर्ग से अधिक अच्छे आ रहे है। वो अब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है और उसके अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में भी महिलाएं शहरी क्षेत्र से कम नहीं रही प्रत्येक क्षेत्र में सराहनीय कार्य करके नारी इस युग में अपना दबदबा बना रही है। अच्छे कार्यो को पूर्ण करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान समय पर मिल रहा है। नारी के द्वारा अपना कार्य लगन से पूर्ण करना फिर अपने बच्चे को उचित शिक्षा देना और अपना घर चलाना सभी कार्य बहुत ही सरलता से पूर्ण किये जा रही है।

साहित्य समीक्षा

हिन्दुस्तान में नारी आजादी के लिये सदैव सधंर्ष करती आ रही है। आधुनिक युग मे नारी ने इसमें बहुत अधिक सफलता प्राप्त कर ली है। (जुलाई 2015 प्रधानमंत्री के मन की बात)

ये सब शिक्षा प्रसार और नारी की लगन का ही परिणाम है, जिसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अनेक प्रकार के कष्ट सहन करके भी इसे प्राप्त किया है। शिक्षा के तेजी से बदलते स्वरूप के कारण से इसमें प्रगति देखने को मिली हैं (2016 में आधुनिक हिन्दी में नारी की कहानी)।

नारी अपने परिवार के इलावा शादी के बाद मे दुसरे परिवार को भी शिक्षित करती है। जिससे एक पथ दो काजं की कहावत सिद्ध होती हैं (www.google. com, प्रतियोगिता दर्पण 2017 अंक)।

भारत ही नहीं विश्व में नारी आगे बढ़ने के लिये पूर्ण प्रयास कर रही है और भारत की नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपना पंचम छोड़ रही है। जिससे देश के विकास में तेजी से बदलाव आ रहा है (आधुनिक हिन्दी में नारी की कहानी 2017)।

उद्देश्य

1. नारी की सामाजिक, आर्थिक, स्थिति के बारे में जानना।
2. भारत के रीतिरिवाज अनुसर कार्य करना।
3. पुरूष वर्ग के समान नारी को लाना।
4. नारी की आजादी के प्रति संघर्ष करनां
5. नारी को उचित शिक्षा दिलवाना।

उपकल्पना

1. नारी के द्वारा किवास के लिये किये गये कार्यो का अध्ययन करना।
2. नारी की शिक्षा के प्रति रूचि को देखते हुये उसके अन्दर किये गये सुधार कार्य।
3. धार्मिक,सामाजिक परम्पराएं के अनुसार शिक्षा को बढ़ाना।
4. नारी को समान अवसर प्रदान करना।
5. नारी को साथ मिलकर आगे बढ़ना।

देश के विकास में प्रमुख नारियों के नाम लिये जा सकते है, वो इस प्रकार से है।

1. कल्पना चावला।
2. इन्दिरा गांधी।
3. मदर टेरेसा।
4. सरोजनी नायडू।
5. मीरा कुमार।
6. विजय लक्ष्मी पंडित।
7. सुमित्रा महाजन।
8. सुषमा स्वराज।
9. पी.टी. उषा।
10. किरण बेदी आदि।

आज की नारी सचेत है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। अपने कार्यो को पूर्ण करने के लिये उनमें होड़ सी लगी रही है। आज के समय में नारी के सशक्तीकरण के जो कार्य किये जा रहे है, वो सराहनीय है। आज के युग में इनको होने वाली दिक्कत को दुर करने का प्रयास किया जा रहा हैं। समाज में इनके कार्यो को उचित ढंग से प्रयोग में लाया जा रहा है।

नारी सशक्तीकरण के कार्य करने के दो भाग हो सकते है।

1. इनकी शक्ति की सही पहचान करना।
2. उनको उनकी जरूरत अनुसार संसाधन उपलब्ध करवाना।

सरकार के द्वारा इनको आगे ले जाने के लिये किये गये कार्य।

1. सशक्तीकरण नामक योजना का आरम्भ किया गया है।
2. इन्दिरा महिला योजना सेवा लागू करना।
3. जन सेवा योजना लागू करना।

सरकार नारी को आगे ले जाने के लिये अनेक योजनाओं को समय–समय पर चालू करवा रही है और उनकी देखरेख कर रही है।

उपलब्धियां

नारी के बारे में समाज मे हो रहे उनके प्रति व्यवहार को जानने को मिला और नारी के द्वारा अपनी कार्य के प्रति दिखाई गई रूचि और लगन से पुरूष समाज ने उनका साथ दिया। जिससे उनके कार्य को और अधिक सहयोग प्रदान हुआ। नारी देश के प्रत्येक कार्य को करने के लिये दिन–रात एक किये हुये है और सरकारी, गैर–सरकारी, अन्य क्षेत्र में लगी हुई है।

मूल्यांकऩ

इस युग में नारी का योगदान बहुमूल्य है और निःसंदेह ही ग्रामीण क्षेत्र की नारीं को इसका लाभ मिला है। वो दिन दुर नहीं जब वो इसे 50 प्रतिशत के भी पार कर लेगी। आज नारी को उचित शिक्षा प्रदान करने के लिये अलग से स्कूल,कॉलेज और विश्वविद्यालय भी बनाये जाने लगे है, जिसमें पुरूष वर्ग के लोग अपने बच्चों को उचित शिक्षा बिना किसी डर के दिलवा रहे है। पहले आने जाने के साधनो की कमी थी, लेकिन अब सरकार भी इसके लिये पूर्ण सुविधा प्रदान करवा रही है। प्रत्येक प्रदान की जाने वाली सुविधा नारियों को समय पर दी जा रही है।

निष्कर्ष

वैदिक समय से लेकर आधुनिक युग तक नारी की दिशा में बदलाव होते रहे है। देश को आगे ले जाने में नारी का अहम रोल आने वाले समय में दिखाई देगा और नारी की प्रत्येक कार्य में भागीदारी होने से इसके लक्षण अभी से दिखाई देने लगे है। इससे ग्रामीण क्षेत्र के विकास को उचित गति मिलेगी और समाज की बुराई समाप्त करवाने में अहम भूमिका होगी। आधुनिक युग में नारी का समाज के विकास में योगदान होना एक प्रगतिशील देश की रेखा मानी जा सकती है। 20 वी. शताब्दी में नारी अपने सभी अधिकारों के प्रति सचेत होती जा रही है। अपनी रक्षा स्वयं करने के लिये वह प्रयासरत है। इनकी लगभग हर समस्या की जड़ भी पुरूष को ही माना जा सकता है। नारी अपने अच्छे जीवन के लिये लगातार प्रयासरत है। अतः उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि आजादी के बाद से नारी के जीवन को गति मिली है और वह आगे भी इसके लिये प्रयासरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भारतीय समाज में नारी आदर्शो का विकास, तक्षशिला, प्रकाशन दिल्ली।*
2. *भारतीय समाज और संस्कृति, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।*
3. *आधुनिक हिन्दी में नारी की कहानी, प्रकाशन दिल्ली।*
4. *स्त्री परम्परा और आधुनिकता, नई दिल्ली।*
5. *स्त्री–पुरूष समाज कुछ पुनर्विचार, नई दिल्ली।*
6. *www.google.com*
7. *www.ayudhnikhindi.com*
8. *www.narijivankikhani.com*